शोध पत्रों का प्रकाशन–

संगोष्ठी के उपरांत चुने हुये विशिष्ट शोध पत्रों का प्रकाशन पुस्तक के रूप में किया जायेगा ।

पंजीयन–

पंजीयन शुल्क रू0 300/– है । छात्र/छात्राओं हेतु पंजीयन राशि रू0 150/– है । पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में प्राचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चरखारी के नाम से शोध पत्र के साथ प्रेषित करना अनिवार्य है । अपरिहार्य स्थिति में इसे नकद भी जमा किया जा सकेगा ।

यात्रा व्यय/आवास/भोजन व्यवस्था–

शोध संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले चरखारी नगर से बाहर के प्रतिभागियों को नियमानुसार निकटतम दूरी से द्वितीय श्रेणी शयनयान का रेल किराया/वास्तविक बस किराया दिया जायेगा । आवास एवं भोजन व्यवस्था महाविद्यालय की ओर से निःशुल्क रहेगी ।

संगोष्ठी स्थल–

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चरखारी , जनपद–महोबा (उ0 प्र0) है । यह महोबा से मुस्करा (कानपुर) मार्ग पर 21 किमी0 की दूरी पर स्थित है । समीपस्थ रेलवे स्टेशन महोबा (इलाहाबाद–झाँसी मार्ग) है जो चरखारी से 18 किमी0 की दूरी पर स्थित है ।

लघु वृन्दावन तथा बुन्देलखण्ड के कश्मीर नाम से सुविख्यात चरखारी नगर में उच्च शिक्षा का यह केन्द्र (महाविद्यालय) ऐतिहासिक मेला–परिसर के समीप स्थित है ।

विन्ध्यांचल की सुरम्य पर्वत श्रेणियों के मध्य प्राकृतिक छटाओं से परिमण्डित, अनेक वन–वीथिकाओं से आच्छादित, आल्हा–ऊदल, महाराज छत्रसाल, महारानी लक्ष्मीबाई आदि अनेक वीर–वीरांगनाओं की प्रसव भूमि बुन्देलखण्ड क्षेत्र के महोबा जनपद में अगाध और अनुपम जलराशियों के मध्य सुशोभित, नयनाभिराम कमलपुष्पों और पक्षियों के कलरव से आच्छादित परस्पर जुड़ी–विजय, मलखान, वंशी, जय, रतन सागर और कोठीताल नामक झीलें, वृन्दावन का आभास कराते कृष्ण के 108 मन्दिर, भूतल से तीन सौ फुट ऊँचा चरखारी का मंगलगढ़ किला जिसमें एक साथ सात तालाब–बिहारी सागर, राधा सागर, सिद्ध बाबा का कुंड, रामकुंड, चौपरा, महावीर कुंड और बख्त बिहारी कुंड विद्यमान है । झील में बनी बहुमंजिली 'कोठी' ताल कोठी की गणना बुन्देलखण्ड की खूबसूरत इमारतों में की जाती है । ऐतिहासिक ड्योढ़ी दरवाजा तथा आगा हश्र कश्मीरी की यादें संजाये मेला परिसर में अवस्थित थियेटर हॉल चरखारी के वैभव की गाथायें गुनगुना रहा है ।

Book-Post

सेवा में, _____

_____

_____

प्रेषक :
प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
चरखारी महोबा (उ0 प्र0)

शोध संगोष्ठी

बुन्देलखण्ड, अतीत और वर्तमान : समस्यायें एवं समाधान

मार्च 1–2, 2012

प्रायोजक :
शिक्षा निदेशक (उच्च शिक्षा)
इलाहाबाद

आयोजक :
इतिहास विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चरखारी
महोबा (उ0 प्र0)

संरक्षक/प्राचार्य
दिनेश चन्द्र पटैरिया

संयोजक
डॉ0 आनन्द गोस्वामी
एसो0प्रोफे0–इतिहास
Mob. 09415169125

सह-संयोजक
डॉ0चुन्ना सिंह
एसो0प्रोफे0–भूगोल
Mob. 09452676641

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कार्यक्रम

गुरूवार, 1 मार्च 2012

पंजीकरण	प्रातः 9.00 बजे से 10.00 बजे तक
उद्घाटन	प्रातः 10 बजे से 11 बजे तक
जलपान	11 बजे से 11.30 बजे तक
प्रथम तकनीकी सत्र	11.30 से 1.30 तक
भोजनावकाश	1.30 बजे से 2.30 बजे तक
द्वितीय तकनीकी सत्र	2.30 बजे से 4.30 बजे तक
चाय	4.30 बजे से 5.00 बजे तक
सांस्कृतिक कार्यक्रम	रात्रि 7 बजे से 9 बजे तक
भोजन	9.00 बजे से 10.00 बजे तक

शुक्रवार, 2 मार्च 2012

पंजीकरण	प्रातः 9.00 बजे से 9.30 बजे तक
जलपान	9.30 बजे से 10.00 बजे तक
तृतीय तकनीकी सत्र	10.00 बजे से 12.00 बजे तक
चाय	12.00 बजे से 12.30 बजे तक
चतुर्थ तकनीकी सत्र	12.30 बजे से 1.30 बजे तक
भोजनावकाश	1.30 बजे से 2.30 बजे तक
सेमिनार मूल्यांकन	2.30 बजे से 3.30 बजे तक
समापन समारोह	3.30 बजे से 4.30 बजे तक
चाय	4.30 बजे से 5.00 बजे तक

शोध–पत्रों को हमारे ई–मेल पर भी भेजा जा सकता है

E Mail-goswamidranand@gmail.com
drsoni_nk@rediffmail.com

बुन्देलखण्ड, अतीत और वर्तमान : समस्यायें एवं समाधान

भारत के मध्य में स्थित बुन्देलखण्ड, अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक परंपरा एवं पुरा–सम्पदा के लिये सुविख्यात है । 19वीं शताब्दी से ही इतिहासकार तथा पुरावैज्ञानिक विरासत की इस बहुमूल्य धरोहर की खोज एवं अनुसंधान में कृत–संकल्पित है । इन विद्वानों के प्रयास से बुन्देलखण्ड का गौरवपूर्ण अतीत प्रकाश में आया है जिनमें कालिंजर एवं अजयगढ की मूर्तिकला, खजुराहो का वास्तु एवं मूर्ति शिल्प, धुबैला, कुन्डेश्वर रामवन, दमोह तथा झांसी संग्रहालयों की चंदेल–कला कृतियां एवं ओरछा और पन्ना की बुन्देली चित्रकला प्रमुख है ।

यह क्षेत्र 'नीस' एवं 'ग्रेनाइट' पर विकसित प्राचीन अपघटित पठारी क्षेत्र है । बुन्देलखण्ड का कीर्ति–कोष बहुआयामी होने के साथ–साथ अत्यंत सशक्त एवं समृद्ध है । देवगढ़, कीरतसागर, कालपी जैसे स्थल, वेद, रामायण की उर्वरभूमि, वाल्मीकि, तुलसी, केशव, बिहारी, मैथलीशरण, ईसुरी, वृन्दावनलाल जैसे रचनाधर्मियों, शिशुपाल, आल्हा–ऊदल जैसे शूरवीरों, तानसेन जैसे संगीत शिरोमणि, बम्पतराय, छत्रसाल जैसे बुन्देलों, लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, पं० परमानन्द जैसे पुरोधाओं की यह धरा भारतीय इतिहास के पन्नों पर अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है ।

वस्तुतः बुन्देलखण्ड का अतीत जितना समृद्ध और सशक्त रहा है वहीं वर्तमान बुन्देलखण्ड अनेक समस्याओं से ग्रस्त है । यहाँ सिंचाई के साधन अत्यल्प है, पर्यावरण प्रदूषण, औद्योगिक पिछड़ापन, अशिक्षा, बीहड़ों एवं दस्युओं की भयावह समस्या है ।

उपर्युक्त समस्याओं एवं उनके संभावित समाधान तथा बुन्देलखण्ड के गौरवशाली अतीत को उजागर करने के लिये दिनांक 1 एवं 2 मार्च, 2012 को हमारा महाविद्यालय शोध संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है ।

वस्तुतः बुन्देलखण्ड शोधार्थियों के लिये उर्वर भूमि है । यहाँ पुरासम्पदायें व प्राकृतिक संसाधन प्रचुरता से उपलब्ध है । पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु यहाँ पर्याप्त दर्शनीय स्थल और प्राकृतिक छटायें विद्यमान है, आवश्यकता है मात्र जनचेतना विकसित करने की ।

शोध संगोष्ठी में सार्थक विचार–विमर्श को प्रोत्साहित करने के लिये कतिपय बिन्दु प्रस्तावित है–

1. बुन्देलखण्ड अतीत से वर्तमान तक : एक ऐतिहासिक यात्रा ।
2. देवगढ़, कालिंजर एवं अजयगढ़ की मूर्तिकला ।
3. खजुराहो का वास्तु एवं मूर्ति शिल्प ।
4. ओरछा और पन्ना की बुन्देली चित्रकला ।
5. चरखारी के मंगलगढ़ दुर्ग का सामरिक महत्व ।
6. बुन्देलखण्ड में कृषि विकास की समस्यायें एवं समाधान ।
7. बुन्देलखण्ड में जल संकट : समाधान एवं जल प्रबंधन ।
8. बुन्देलखण्ड के खनिजों की उपलब्धता और औद्योगिक विकास की समस्यायें ।
9. बुन्देलखण्ड में पर्यटन उद्योग का विकास : समस्यायें एवं समाधान ।
10. बुन्देलखण्ड में सूखा एवं पर्यावरण प्रदूषण की समस्या एवं समाधान ।
11. बुन्देलखण्ड के वन संसाधन : संरक्षण के उपाय ।
12. बुन्देलखण्ड में दस्युओं की समस्या एवं समाधान ।

शोध पत्र–

संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वज्जनों से अनुरोध है कि वे उक्त बिन्दुओं के अन्तर्गत अंकित किसी भी विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत करें । पूर्ण शोध पत्र हिन्दी/अंग्रेजी में अधिकतम 2500 शब्दों में या सारांश 500 शब्दों में ए–4 आकार के कागज पर सी. डी. के साथ 15 फरवरी, 2012 तक संयोजक/सह संयोजक के पास अवश्य पहुंच जाना चाहिये, ताकि संगोष्ठी में आपकी प्रतिभागिता सुनिश्चित की जा सके ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शोध संगोष्ठी

बुन्देलखण्ड, अतीत और वर्तमान : समस्यायें एवं समाधान

1 एवं 2 मार्च, 2012

1. नाम (क)हिन्दी में.....
   (ख)अंग्रेजी में.....
2. पद.....
3. विश्वविद्यालय / महाविद्यालय / संस्था
   .....
   .....
4. पत्र व्यवहार का पता.....
   .....
   .....
   दूरभाष / मोबाइल.....
   फैक्स.....
   ई–मेल.....
5. शोध–प्रपत्र–शीर्षक.....
   .....
   .....
6. पंजीयन शुल्क– रू0 300 / –(छात्र / छात्रा हेतु 150 / –)
   बैंक ड्राफ्ट सं.....
   बैंक का नाम.....
   बैंक ड्राफ्ट जारी होने की तिथि.....

दिनांक.....
स्थान..... हस्ताक्षर.....

नोट : पंजीयन की छायाप्रति भी स्वीकार्य है ।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com